



शेरेटन में बिक का बोर्ड

मैं ठीक समय पर पहुँचा।

वह वहाँ नहीं थी।

फिर मेरा फ़ोन बजा।

शनेल थी। उसने माफ़ी माँगी। वह टैक्सी में थी, अभी रास्ते में, और बस पाँच मिनट देर से पहुँचेगी।

कुछ मिनट बाद मैंने उसे होटल में दाखिल होते देखा।

लंबे सुनहरे बाल। लंबा क़द। नफ़ीस। ऐसी मौजूदगी जिसे किसी परिचय की ज़रूरत नहीं थी।

वह रिसेप्शन पर गई, चेक-इन किया, अपना सामान छोड़ा, और फिर मेरी तरफ़ चली आई।

“श्री फ़ेगा, नमस्कार। मैं शनेल हूँ। मुझे पहले से यह बड़त हासिल है कि मैं जानती हूँ आप कौन हैं। आपकी वेबसाइट के वीडियो और आपकी तस्वीर ने झूठी उम्मीदें नहीं जगाईं। और यह भी सच है कि आपने कोई फ़िल्टर इस्तेमाल नहीं किया। आप सचमुच ठीक वैसे ही दिखते हैं जैसे विज्ञापन में थे।”

“शुक्रिया, मैडम। कृपया बैठिए। क्या मैं आपके लिए कॉफ़ी या पीने को कुछ और मँगवाऊँ? इत्मीनान से। मुझे कोई जल्दी नहीं है, और मैं जानता हूँ कि एक महिला की संगत में एक सज्जन को कैसे पेश आना चाहिए।”

“नहीं, शुक्रिया। मैं एयरपोर्ट पर कॉफ़ी पी चुकी हूँ। दरअसल, आज मैंने एक नई खुशबू लगाई है। उम्मीद है आपको पसंद आएगी।”

खुशबू ने मेरा ध्यान खींचा।

“इसका नाम क्या है?” मैंने पूछा। “मेरी इंद्रियों के लिए यह बिल्कुल नई है।”

वह मुस्कुराई।

“खैर, इसका नाम एक पुराना फ़्रांसीसी क्लासिक है। यह एक बहुत सीधे सवाल का जवाब देता है: मैदान में उतरे बिना किसी इतालवी को कैसे हराया जाए?”

मैंने सीधे उसकी आँखों में देखा।

नफ़ासत के अलावा, वह ग़ज़ब की समझदार थी। बस इतने से ही मैं बातचीत जारी रखने को और तैयार हो गया। लगभग फ़ौरन ही गहरे तालमेल का एहसास उभर आया।

वह अपने आने का मक़सद समझाने लगी, लेकिन बोलते वक़्त उसके हिलने-डुलने के अंदाज़ से मेरा ध्यान भटकता रहा। उसने यह भाँप लिया। रह-रहकर वह रुकती और पूछती कि क्या सब कुछ साफ़ है।

साफ़, पर एक हद तक ही।

उसमें वैसी मौजूदगी थी जो ध्यान लगाना मुश्किल कर देती है।

फिर उसने कुछ ऐसा कहा जिसने मुलाक़ात की दिशा पूरी तरह बदल दी।

“बिक फ़्रांस के पाँच वरिष्ठ अधिकारी आज मेरे साथ आए हैं। वे आपसे मिलना चाहते हैं। असली बातचीत वहीं से शुरू होती है।”

मेरा ध्यान फ़ौरन विषय पर लौट आया।

उसने उन्हें आगे आने का इशारा किया। आखिर, मैं उनसे मिलने को राज़ी जो हो गया था।

पल भर में हम सात लोग चार सोफ़ों से घिरी एक मेज़ के इर्द-गिर्द जमा थे।

पहले तो मुझे लगा कि कोई ग़लतफ़हमी हुई है।

मुझसे एक मुलाक़ात के लिए लोग इतनी दूर फ़्रांस से चलकर क्यों आएँगे?

उनमें सबसे बुज़ुर्ग ने अपना परिचय दिया।

“मेरा नाम एम... ए. है। मैं इस समय बिक फ़्रांस का सीईओ हूँ।”

मुझे अब भी कोई अंदाज़ा नहीं था कि वे चाहते क्या हैं।

मैंने सबसे अपना-अपना परिचय देने को कहा।

तस्वीर बहुत जल्दी साफ़ हो गई।

बिक का पूरा नेतृत्व बोर्ड मेरे सामने खड़ा था।

मुलाक़ात की वजह वह संपादकीय ओपा था जो मैंने ऑनलाइन छेड़ा था।

उन्होंने उसे गंभीरता से लिया था।

दरअसल, इतनी गंभीरता से कि वे अपने ही भविष्य पर सवाल करने लगे थे। क्या नए संगठन में उन्हें नई जगह दी जाएगी? क्या उन्हें कहीं और नौकरी ढूँढनी पड़ेगी?

और किसी तरह यह संपर्क शनेल के ज़रिए जोड़ा गया था, जो ज़्यादातर चुप रही और इशारों से बात करती रही। एक ऐसी मौजूदगी जिसे अनदेखा करना नामुमकिन था।

मैंने समझाया कि मैं बस एक लेखक हूँ, इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

किसी ने मेरी बात का यकीन नहीं किया।

जवाब एक स्वर में आया।

“जब जिलेट का कोई आदमी बोलता है, तो हमारे शेयरधारक भी चुपचाप सुनते हैं। और सबसे पहले खुद बिक परिवार।”

मैंने थोड़ा विराम माँगा और कॉफी का बहाना बनाया, ताकि तय कर सकूँ कि आगे क्या कहना है।

स्थिति असामान्य थी।

फिर भी पहली बार मुझे एक बात का यकीन हो गया: नैरेटिव वादों से कहीं ज़्यादा उथल-पुथल मचाता है।

और इसे मैं अब जाकर समझने लगा था।

फर्दिनांदो